छायावाद ~~की विशेषताएँ~~

डॉ० अनिरुद्ध सिंह
हिन्दी विभाग
मारवाड़ी महाविद्यालय

(स्नातक हिन्दी प्रतिष्ठा प्रथम वर्ष)
- हिंदी साहित्य का इतिहास

आधुनिक हिन्दी कविता के तीसरे चरण को छायावाद के नाम से जाना जाता है। भक्तिकाव्य की गहराई, ~~रीति~~ व्याप्ति और औदात्य से यह कविता युक्त है। यह भी इतिहास का एक विचित्र विरोधाभास है कि अपने आरंभिक काल में छायावाद को हिन्दी आलोचना के कोप का शिकार होना पड़ा। हिन्दी आलोचना के शिखर पुरुष आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने छायावाद को उक्ति वैचित्र्य वाद, रहस्यवाद और अनुकरण मूलक कहा। इसलिए छायावाद को अपनी आरंभिकता में ही अपने अस्तित्व के लिए संघर्ष करना पड़ा।

मोटे तौर पर छायावाद का कालखण्ड 1918 से 1936 के बीच माना जाता है। यह आधुनिक भारतीय इतिहास में नवजागरण का, स्वाधीनता आंदोलन का, विश्व युद्ध का और साहित्य के क्षेत्र में द्विवेदी युग के अवसान का समय है। इसलिए इस कविता की मानसिकता पर कहीं न कहीं नवजागरण और स्वाधीनता आंदोलन और विश्वयुद्ध की छाया देखी जा सकती है।

Scanned with CamScanner

छाया की कई व्याख्यांए की गई हैं। रामचंद्र शुक्ल ने छाया अर्थ किया अनुकरण, छाया मौलिक नहीं होती. वह मूल का प्रतिबिम्ब होती है और आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने छायावादी कविता को अनुकरण मूलक कहा है।

1- <u>उक्तिवैचित्र्यवाद-</u> का अर्थ होता है एक चौंकाने वाला ढंग से, विशिष्ट ढंग से कहने की शैली। जैसे अगर छायावादी रचनाकार को प्रेम की अनुभूति को अभिव्यक्त करना है, प्रेयसी के बिना जीवन बिल्कुल अकेला और सूना है तो छायावाद का रचनाकार कुछ इस तरह से कहेगा-

'झंझा झकोर गर्जन था बिजली थी निरद माला।
पाकर इस शून्य हृदय को सबने आ डेरा डाला।।'

इसमें दो-तीन चीजें दिखाई दे रही हैं आंधी, तूफान और बारिश का चित्र है।

इसी विशेष प्रकार की शैली को कहने की पद्धति को शुक्ल जी ने उक्तिवैचित्र्यवाद कहा और उन्हें लगा कि छायावाद का रचनाकार हर बात को एक खास शैली में व्यक्त करना चाहता है-

'उस फैली हरियाली में सजा हृदय की
थाली में कौन अकेली खेल रही
मां सजा हृदय की थाली।'

(सुमित्रानंदन पंत)

2. **सूक्ष्मता-** छाया का दूसरा अर्थ किया गया सूक्ष्मता। स्थूल की तुलना में छाया हमेशा सूक्ष्म होती है। यह सूक्ष्म अनुभूतियों का काव्य है। इसलिए आगे चलकर डॉ. नगेन्द्र ने छायावाद की परिभाषा करते हुए ~~लिखा~~ कहा कि 'छायावाद स्थूल के प्रति सूक्ष्म का विद्रोह है।' द्विवेदी युग में स्थूलता दिखायी देती है। द्विवेदी युग विचार को अनुभूति और कल्पना में रूपांतरित नहीं करता। वह विचार को ज्यों का त्यों कविता में कर देता है -

'केवल मनोरंजन न कवि का कर्म होना चाहिए।
उसमें उचित उपदेश का भी मर्म होना चाहिए।'

नगेन्द्र जी कह रहे थे कि छायावाद स्थूल के प्रति सूक्ष्म का विद्रोह है इसलिए छायावाद में कुछ भी साफ नहीं आता- महादेवी कहती हैं -

'मेरे प्रिय को भाता है तम के परदे में आना।'

महादेवी वर्मा का प्रिय कभी भी दिन के उजाले में नहीं आता। हर जगह कुछ न कुछ छिपा हुआ है, कुछ है जो सतह पर दिखाई नहीं देता बल्कि जिसका एक इतिहास है।

विचार के स्तर पर अनुभूति और मानसिकता का आग्रह बढ़ा, इसलिए जब प्रसाद 'आंसू' लिख रहे थे तो उन्होंने पंक्ति लिखी -

'जो घनीभूत पीड़ा थी मस्तक में स्मृति सी छायी,
दुर्दिन में आंसू बन कर वह आज बरसने आयी।'

जो संकलित पीड़ा थी मस्तिष्क में स्मृतियों में वह बारिश बनकर आई। वह खराब दिनों में आंसुओं के रूप में

Scanned with CamScanner

इसलिए छायावाद ने स्थूलता को छोड़ दिया, सूक्ष्मता पर आ गयी और यह सूक्ष्मता स्थूलता के विरोध में है या स्थूलता की प्रतिक्रिया में है। इसलिए जो स्थूल की प्रतिक्रिया में लिखा गया उसे छाया कहा गया।

3- वायवीयता - छाया की तीसरी व्याख्या की गई वायवीयता के अर्थ में। छायावाद में जीवन के सामाजिक पक्षों की तुलना में जीवन के व्यवहारिक अथवा यथार्थपरक संदर्भों को छोड़ कर एक कल्पना प्रधान अमूर्त अनुभूति को प्रधानता दी गई थी।

एक इतर प्रसंग है कि छायावाद के बिल्कुल आरंभिक दौर में जो किशोर मन की अवचेतन की कुण्ठाएं हैं उनको प्राथमिकता दी गई थी। कहीं भी उसमें समाज, जीवन, परिवार, इतिहास और समय नहीं था। 'ग्रंथि' 1919 में प्रकाशित हुई थी, जो पंत की कविता है। उसमें अतृप्ति की अभिव्यक्ति ज्यादा है इसलिए सामाजिक, राजनीतिक और जीवन के जो ठोस संदर्भ है वे कहीं दिखायी नहीं देते। इसलिए छायावाद को वायवीय कहा गया, जिसका जीवन के कोलाहल से कोई संबंध नहीं है। इस तरह से अनुकरण, सूक्ष्म और वायवीय इन तीन स्थितियों पर आधारित कविता के समूह को छायावाद के रूप में जाना गया।

Scanned with CamScanner

~~छायावाद की प्रवृत्तियाँ~~ -

प्रत्येक काव्य आंदोलन का कोई न कोई तरंग केन्द्र होता है जिसे हम मूल्य चेतना कहते हैं। जैसे भक्तिकाव्य में भक्ति केन्द्र में है, रीतिकाल में रीति है, भारतेन्दु में संक्रमण है, द्विवेदी युग सुधार है। छायावाद में यह मूल्य चेतना है 'स्वतंत्रता'।

छायावाद की लगभग सभी विशेषताएं इसी स्वातंत्रिक चेतना से निर्मित, संचालित और विकसित होती हैं। स्वतंत्र चेतना हमारे ऐतिहासिक समय और समाज की संरचना ~~क्लास~~ के स्तर पर भी इस 'स्वतंत्र' चेतना के औचित्य को सिद्ध करती है।

राजनीतिक स्तर पर देश स्वाधीनता आंदोलन की लड़ाई लड़ रहा है और सामाजिक स्तर पर जो परम्परागत सामंतवादी ढांचा है। इस तरह से एक परतंत्रता साम्राज्यवाद के द्वारा थोपी गई है। और दूसरी परतंत्रता सामंती व्यवस्था की सामाजिकता से निर्मित है। राजनीतिक शब्दावली में सामंतवाद और साम्राज्यवाद की सम्मिलित परतंत्रताओं के बीच कवि खड़ा है और उससे मुक्ति की कोशिश करता है। इसलिए स्वतंत्रता उसकी मूल चेतना कही जा सकती है। इस कविता में आदि से अंत तक यह स्वातंत्र्य चेतना विभिन्न संदर्भों और रूपों में प्रकट होती है। जैसे -

'प्रिय स्वतंत्र रव अमृत मंत्र नव भारत में भर दे।'

Scanned with CamScanner

यह स्वतंत्रता का जो मंत्र है यह अमृत का मंत्र है। माँ सरस्वती तुम इस समूचे हिन्दुस्तान में भर दो। यह स्वतंत्रता कैसे अभिव्यक्त होगी? निराला ने इसे जो बिम्ब दिया है वह उड़ान का बिम्ब है। क्योंकि स्वतंत्रता उड़ान है या झरने का प्रवाह है। गति और उड़ान ही स्वतंत्रता के अर्थ को मूर्तिमान करते हैं-

'नवगति नवलय ताल छंद नव
नवल कंठ नव जलद मंद्र रव
नव नभ के नव विहग बृंद नव पर नव स्वर दे
वर दे वीणा वादिनी, वर दे।'

स्वतंत्रता की आकांक्षा है और आसमान में उड़ते हुए विहगों में और निर्झर की गतियों में देखी गयी है। इसलिए कहा है कि स्वातंत्र्य वह मूल्य चेतना है जिसे छायावाद की सभी प्रवृत्तियों में देखा जा सकता है।

Scanned with CamScanner